

डॉ. गैरी येट्स, जेरेमिया, व्याख्यान 6, पुस्तक अवलोकन

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र छठा है, यिर्मयाह की पुस्तक का एक अवलोकन।

हमारे पिछले सत्र में, हमने यिर्मयाह की पुस्तक के गठन और संरचना और उस प्रक्रिया के बारे में बात की जिसके बारे में भगवान ने यिर्मयाह की पुस्तक लाने के लिए उपयोग किया था।

ईश्वर ने पुस्तक को प्रेरित किया। ईश्वर ने पैगंबर को उनके बोले गए शब्द और उनके लिखित शब्द दोनों से प्रेरित किया, लेकिन किताब कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो बस आसमान से गिरी हो, और इसमें एक प्रक्रिया शामिल थी। एक पुस्तक के रूप में यिर्मयाह की पुस्तक को समझने में हमारी मदद करने के लिए, मैं इस सत्र में हमें यिर्मयाह की पुस्तक का एक सिंहावलोकन देना चाहूंगा, जहां हम पुस्तक के बड़े संदेश को समझेंगे और यह सब एक इकाई के रूप में एक साथ कैसे फिट बैठता है।

कभी-कभी जब हम बाइबल का अध्ययन कर रहे होते हैं, तो हम किसी पुस्तक से अलग-अलग अंश निकाल लेते हैं। जब आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, तो आपको कुछ ऐसे अंश मिल सकते हैं जो दूसरों की तुलना में आपके लिए अधिक दिलचस्प हों, लेकिन जंगल के साथ-साथ पेड़ों को भी देखना महत्वपूर्ण है। मेरा मानना है कि जब हम समझते हैं कि किताब एक इकाई के रूप में एक साथ कैसे फिट बैठती है, तो हमें वहां मौजूद अलग-अलग अंशों की भी बेहतर समझ होती है।

मैं आपको हमारे पिछले पाठ के कुछ उद्धरण याद दिलाना चाहता हूँ। यिर्मयाह निश्चित रूप से एक कठिन पुस्तक है। आप महसूस कर रहे होंगे कि जब आप इसे पढ़ रहे हैं और इस अध्ययन के संबंध में अध्ययन कर रहे हैं तो आपको इसका अनुभव हो रहा होगा।

जैसा कि मैं चीजों को बहुत तेजी से संदर्भित करता हूँ, कभी-कभी वीडियो में, आप कह सकते हैं, वह कहां है? मैं उसे कैसे पा सकता हूँ? लेकिन याद रखें कि एंड्रयू शीड ने अपनी पुस्तक ए माउथफुल ऑफ फायर में क्या कहा है। जेरेमिया लंबा है, दोहराव से भरा है, अपने कालक्रम में अरेखीय है, और लगातार एक शैली से दूसरी शैली में घूमता रहता है। फिर, आरपी कैरोल, अपने अधिक निंदनीय तरीके से, आधुनिक पाठक के लिए, यशायाह, जेरेमिया और ईजेकील की किताबें वस्तुतः किताबों के रूप में समझ से बाहर हैं।

जो व्यक्ति पूरी तरह से भ्रमित नहीं है, या जो व्यक्ति यिर्मयाह की पुस्तक से भ्रमित नहीं है, उसने इसे नहीं समझा है। और इसलिए, यदि लोग इस तरह के बयान दे रहे हैं, तो आप सवाल पूछ सकते हैं, मैं यिर्मयाह की पुस्तक को कैसे समझ सकता हूँ? यह पुस्तक जो इतनी अजीब लगती है, उसे हम जो किताबें पढ़ते हैं, उनसे इतने अलग तरीके से कैसे जोड़ा जा सकता है? मैं इसे कैसे समझ सकता हूँ? मुझे यकीन है कि यिर्मयाह की पुस्तक शायद आपके किंडल पर मौजूद

किसी भी किताब की तरह नहीं है। और इसलिए, मैं हमें यह समझाना चाहता हूँ कि इसे एक इकाई के रूप में कैसे पढ़ा जाए, इसे एक किताब के रूप में कैसे समझा जाए।

यिर्मयाह की पुस्तक पॉल के पत्रों से बहुत अलग है। यिर्मयाह की पुस्तक सुसमाचारों से अलग है। यिर्मयाह की पुस्तक उन अलग-अलग पुस्तकों से भी अलग है जिनसे आप पुराने नियम में अधिक परिचित हैं, जैसे उत्पत्ति, भजन या नीतिवचन।

लेकिन इस पुस्तक से एक एकता उभरकर सामने आती है, जो मुझे लगता है कि हमें इसे समझने में मदद करती है। फिर से, आलोचनात्मक विद्वान इस पुस्तक को अव्यवस्थित, भ्रमित करने वाली, कुछ ऐसी चीज़ के रूप में देखना चाहते हैं जिसे बेतरतीब तरीके से एक साथ रखा गया है। विलियम मैक्केन, जो यिर्मयाह पर अंतर्राष्ट्रीय आलोचनात्मक टिप्पणी के लेखक थे, पुस्तक पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण टिप्पणी, यिर्मयाह की तुलना करते हैं। वह इसे एक रोलिंग कॉर्पस के रूप में संदर्भित करता है।

और एक अर्थ में, वह यिर्मयाह की पुस्तक की तुलना पहाड़ी से लुढ़कते हुए बर्फ के गोले से करता है। और इस रोलिंग कॉर्पस में आपके पास जो है वह मूल रूप से यिर्मयाह की पुस्तक के पहले के संदेश हैं, जैसे-जैसे वे बढ़ते और विकसित होते हैं, वे एक पहाड़ी से लुढ़कते हुए स्नोबॉल की तरह सामग्री जमा करते हैं। अब, मुझे लगता है कि आप इस तथ्य से भली-भांति परिचित हैं कि पहाड़ी से नीचे लुढ़कने वाला स्नोबॉल बहुत सामंजस्यपूर्ण रूप से डिज़ाइन नहीं किया गया है।

और यही यिर्मयाह की पुस्तक के बारे में उनकी समझ है। वाल्टर ब्रूगेमैन, मुझे लगता है कि पुस्तक के प्रति बहुत ही आधुनिक दृष्टिकोण को दर्शाते हुए, यिर्मयाह की पुस्तक में विभिन्न संपादकों और संपादकों के प्रभाव को देखते हैं। मूल रूप से, वह पुस्तक को इस रूप में समझते हैं कि इसमें उन सभी अलग-अलग आवाज़ों का कोलाहल है जिनके पास निर्वासन की पीड़ा, चल रहे राजनीतिक संकट पर अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

इस निर्वासन में लोगों के इस समूह और इन शरणार्थियों का क्या होता है? और परमेश्वर कब लोगों को वापस लाएगा? और फिर, लंबे समय तक विकास होता रहेगा। और यिर्मयाह की पुस्तक में, एक अर्थ में, ये सभी असंगत आवाज़ें हैं, और किसी तरह, परमेश्वर का वचन उसी से निकलता है। मेरा मानना है कि अगर हम इस तथ्य के बारे में आश्वस्त हैं कि यिर्मयाह परमेश्वर का वचन है, कि यह परमेश्वर से प्रेरित है, और कि परमेश्वर ने इस पुस्तक को एक साथ रखने के लिए निर्देशित किया है, तो इससे एक बहुत अधिक व्यवस्थित संदेश निकलेगा।

अब, कभी-कभी, इस पुस्तक को एक साथ रखने की कठिनाइयाँ कम नहीं होती हैं। यह इस तथ्य को कम नहीं करता है कि पुस्तक को कालानुक्रमिक तरीके से एक साथ नहीं रखा गया है जैसे कि हम किताबें पढ़ने के आदी हैं, लेकिन इसके पीछे एक क्रम और एक डिज़ाइन परिलक्षित होता है। लुईस स्टुहलमैन, जब वह यिर्मयाह की पुस्तक के साथ काम कर रहे थे, पुस्तक को संदर्भित करते हैं और इस प्रकार पुस्तक का वर्णन करते हैं।

उनका कहना है कि यह अराजकता के बीच व्यवस्था का प्रतिबिंब है। और कुछ अर्थों में, शायद स्पष्ट अव्यवस्था, जैसा कि हम यिर्मयाह की पुस्तक को देखते हैं, वास्तव में, उस समय का प्रतिबिंब हो सकता है जिसमें यिर्मयाह जी रहा है। और इसलिए, हमारे पास ये असंगत छवियां हैं, और हमारे पास इन विभिन्न शैलियों को एक-दूसरे के ऊपर एक-दूसरे के ऊपर थोपा जा रहा है, एक अर्थ में, उस समय अवधि को प्रतिबिंबित करने के लिए जिसमें यिर्मयाह रहता है।

यिर्मयाह की पुस्तक में ऐसे स्थान हैं जहाँ कालक्रम का अनुसरण करना बहुत ही भ्रामक है क्योंकि यिर्मयाह विभिन्न जेलों और विभिन्न स्थानों में रहा है। आप पुस्तक को पढ़ते हुए यह प्रश्न पूछ रहे होंगे कि वह इस जेल से उस जेल में कैसे पहुँचा? और इसका कोई स्पष्टीकरण क्यों नहीं है? लेकिन एक अर्थ में, यह यिर्मयाह के जीवन की अव्यवस्था को दर्शाता है। यह उस व्यक्ति की अव्यवस्था को दर्शाता है जिसे अक्सर भागते हुए प्रचार करना पड़ता है या एक ऐसे व्यक्ति को जिसे अपनी भविष्यवाणियों की पुस्तक को रिकॉर्ड करना पड़ता है और फिर छिप जाना पड़ता है क्योंकि उसके लिए सार्वजनिक रूप से प्रकट होना सुरक्षित नहीं है।

यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति के साथ क्या होता है जो तब तक जेल में रहता है जब तक कि यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा नहीं हो जाता। और फिर उस शहर पर कब्ज़ा करने से उसकी जेल से रिहाई हो जाती है। तो, अराजकता के बीच व्यवस्था है।

एक श्लोक जिसने मुझे यिर्मयाह की पुस्तक की प्रगति और विकास को समझने में मदद की है, वह पुस्तक की शुरुआत में ही यिर्मयाह अध्याय एक, श्लोक नौ में पाया जाता है। और हमारे पास यिर्मयाह अध्याय एक की नौवीं कविता में यह है कि प्रभु भविष्यवक्ता से कहते हैं, मैंने अपने शब्द तुम्हारे मुंह में डाल दिए हैं। और फिर पद 10 में देखो, मैंने आज के दिन तुझे जाति जाति और राज्य राज्य पर अधिककारनी ठहराया है।

और फिर वह हमें पाँच क्रियाएँ देता है जो यिर्मयाह के मंत्रालय में संदेश का वर्णन करती हैं। आपके शब्दों को इसी उद्देश्य से डिज़ाइन किया गया है। वे उखाड़ने और तोड़ने, नष्ट करने और उखाड़ फेंकने, निर्माण करने और रोपने के लिए बनाए गए हैं।

यिर्मयाह यहूदा और राष्ट्रों दोनों के लिए एक भविष्यवक्ता था। मैंने तुझे जाति जाति के लिये भविष्यवक्ता नियुक्त किया है। यिर्मयाह सिर्फ यहूदा और इज़राइल के बारे में नहीं बोलता है।

यिर्मयाह मिस्र, बेबीलोन, अम्मोनियों, एदोमियों और इस्राएल के आस-पास रहने वाले लोगों के बारे में बात करता है। उसका संदेश इस्राएल से परे तक फैला हुआ है। और इसलिए, पुस्तक के कुछ हिस्से ऐसे हैं जो इस्राएल और यहूदा के भविष्यवक्ता के रूप में यिर्मयाह पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं।

अध्याय एक से 45 में यही प्राथमिक फ़ोकस है। लेकिन राष्ट्रों के लिए एक भविष्यवक्ता के रूप में यिर्मयाह पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा और अध्याय 46 से 51 हमें उन लोगों के खिलाफ़ यिर्मयाह द्वारा बोले गए भविष्यवाणियों को बताने जा रहे हैं। अध्याय 25, जो पुस्तक के पहले भाग का सारांश और निष्कर्ष प्रदान करता है और पुस्तक के दूसरे भाग में एक मोड़ देता है, फिर से इस बात पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है कि उसका संदेश राष्ट्र से कैसे संबंधित है।

इसलिए, यह समझना कि यिर्मयाह इस्राएल और राष्ट्रों के लिए एक भविष्यवक्ता है, हमें पुस्तक के डिजाइन और क्रम को समझने में मदद करता है। और फिर हम इन छह क्रियाओं पर वापस जाते हैं, उखाड़ना, तोड़ना, नष्ट करना, उखाड़ फेंकना, बनाना और रोपना। ये क्रियाएँ यिर्मयाह की पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर न्याय के उसके संदेश और उद्धार के उसके वादों के सारांश के रूप में दिखाई देंगी।

वे अध्याय 25 में होंगे। वे अध्याय 31 में होंगे। वे अध्याय 45 में होंगे।

इस बात पर निर्भर करते हुए कि वे खंड न्याय या उद्धार से संबंधित हैं, वे क्रियाएँ यिर्मयाह के संदेश का सारांश प्रस्तुत करेंगी। इसलिए, जैसा कि हम इसे देख रहे हैं, हम यह समझकर यिर्मयाह के संदेश की संरचना और क्रम बनाना शुरू करते हैं कि वह न्याय का भविष्यवक्ता और उद्धार का भविष्यवक्ता है। परमेश्वर यहूदा का न्याय करने जा रहा है।

वह उनकी वाचा की बेवफाई के लिए उन्हें नष्ट करने जा रहा है। लेकिन फिर यिर्मयाह मुक्ति का भविष्यवक्ता है। परमेश्वर इस्राएल को पुनर्स्थापित करने जा रहा है।

परमेश्वर उनके शत्रुओं का न्याय करने जा रहा है, और परमेश्वर अंततः चीजों को सही करने जा रहा है। यिर्मयाह की पुस्तक की मूल अवधारणा को समझने मात्र से हमें, आंशिक रूप से, पुस्तक किस बारे में है इसकी संरचना मिल जाती है। स्टुहलमैन, फिर से, अपनी पुस्तक, ऑर्डर एमिड कैओस में, कहते हैं कि अध्याय 1 से 26, या अध्याय 1 से 25, पुस्तक का पहला भाग, मूल रूप से यिर्मयाह के तोड़ने और उखाड़ने के मंत्रालय से संबंधित है।

और पुरानी दुनिया और पुरानी व्यवस्था और वे सभी चीजें जो इस्राएल के पिछले इतिहास से संबंधित हैं, परमेश्वर उन्हें उखाड़ रहा है। एक अर्थ में, परमेश्वर उस वाचा के वादे को पलट रहा है जो उसने इस्राएल से किया था और इसके बदले में उन पर वाचा का दंड ला रहा है। इज़राइल ने ईश्वर के साथ अपने रिश्ते में सुरक्षा प्रदान करने के लिए जिन चीजों पर भरोसा किया है, उन चीजों को अध्याय 1 से 25 में तोड़ा और उखाड़ा जा रहा है।

लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में ईश्वर के निर्माण और रोपण पर जोर दिया जाएगा। वहाँ निर्वासन का निर्णय होने वाला है। अध्याय 37 से 44 में कथा होगी जो यरूशलेम के पतन के आसपास यिर्मयाह के जीवन में घटी घटनाओं पर केंद्रित है।

लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में निर्माण, नई वाचा और परमेश्वर लोगों को वापस भूमि पर कैसे लाएगा, इस पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। इसलिए, एक अर्थ में, जैसा कि आप यिर्मयाह की पुस्तक के माध्यम से काम कर रहे हैं, याद रखें कि पुस्तक के पहले भाग में, अध्याय 1 से 25 में, तोड़ने और उखाड़ने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग में, अध्याय 26 और 52 में, वास्तविक रूप से तोड़ने की घटना घटित होती है।

लेकिन इसके बीच में, यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर अपने शहर और अपने लोगों को कैसे फिर से बसाएगा और न्याय के बाद वह उनके लिए क्या करने जा रहा है। अब, मेरा मानना है कि हम

पुस्तक को और भी विभाजित कर सकते हैं। पहले भाग में हमें पुरानी व्यवस्था को ध्वस्त करने के बारे में बताया गया है।

दूसरे भाग में हमें नए क्रम का पुनर्निर्माण करना है। मेरा मानना है कि हम वास्तव में पुस्तक के क्रम में अधिक विशिष्ट अनुभाग देख सकते हैं। और मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करना चाहूँगा।

एंड्र्यू शीट ने फिर से अपनी पुस्तक, ए माउथफुल ऑफ़ फायर में, जो मुझे लगता है कि यिर्मयाह की पुस्तक के बारे में मेरे द्वारा पढ़े गए सबसे अच्छे धर्मशास्त्रीय अध्ययनों में से एक है, इस तथ्य के बारे में बात की है कि यिर्मयाह की पुस्तक एक कहानी है, न केवल एक भविष्यवक्ता के जीवन के बारे में, बल्कि यह ईश्वर के वचन के बारे में कहानी है, इस विचार से परे कि पुस्तक का पहला भाग जो तोड़ने और उखाड़ने से संबंधित है और पुस्तक का दूसरा भाग जो फिर से निर्माण और रोपण से संबंधित है। मुझे लगता है कि हम यिर्मयाह की पुस्तक को व्यवस्थित और संरचित करने के अधिक विशिष्ट विभाजन और अधिक विशिष्ट तरीके देख सकते हैं। एंड्र्यू शीट ने अपनी पुस्तक, ए माउथफुल ऑफ़ फायर में कहा है कि यिर्मयाह की पुस्तक की कहानी अनिवार्य रूप से ईश्वर के वचन की कहानी है।

यह सिर्फ़ यिर्मयाह का जीवन नहीं है। यह यिर्मयाह की जीवनी नहीं है, बल्कि यह कहानी है कि क्या होता है जब परमेश्वर का वचन यिर्मयाह की हड्डियों में आग बन जाता है। वह उपदेश देना और संवाद करना शुरू करता है।

जब यह वचन बाहर जा रहा होता है तो उसके साथ क्या होता है? और इसलिए, यिर्मयाह, एक अर्थ में, परमेश्वर के वचन का जीवंत प्रतिनिधित्व बन जाता है। वह उस वचन का मूर्त रूप बन जाता है। और इसलिए, यिर्मयाह के साथ जो कुछ हुआ, उत्पीड़न के विभिन्न रूप, उत्पीड़न, कालकोठरी में फेंका जाना, और उसके जीवन की धमकी दी जाना यह दर्शाता है कि लोग परमेश्वर के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

यह परमेश्वर का वचन भी है जो यरूशलेम के पतन का कारण बनता है। परमेश्वर अपने भविष्यसूचक वचन को पूरा करता है। और फिर यह परमेश्वर का वचन है जो इस्राएल के लोगों को उनके भविष्य के लिए आशा देता है, कि परमेश्वर ने उन्हें त्यागा नहीं है।

और इसलिए, शीद बताते हैं कि यिर्मयाह की पुस्तक 14 या 15 अलग-अलग इकाइयों के आसपास संरचित है जिन्हें अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों द्वारा पेश किया गया है, प्रभु का वचन यिर्मयाह तक आया था। तो, आप देख सकते हैं कि उनमें से तीन हैं अध्याय एक, अध्याय एक, श्लोक चार, अध्याय एक, श्लोक 11, अध्याय 13, और फिर अध्याय दो, अध्याय सात, अध्याय 11, और आगे। इसलिए, जब आप यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ रहे हैं, तो बड़े खंडों और छोटे खंडों दोनों पर ध्यान दें, जो किसी न किसी तरह से प्रभु के वचन द्वारा यिर्मयाह तक पहुंचाए गए हैं।

कभी-कभी, यह निर्धारित करते समय कि एक दैवज्ञ कहाँ से शुरू होता है या एक उपदेश कहाँ से शुरू होता है और दूसरा कहाँ समाप्त होता है, अक्सर इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हमारी मदद करने और हमारा मार्गदर्शन करने के लिए होती हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि यह पुस्तक

में एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक मार्कर है। समझने योग्य दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि पुस्तक पाठ के तीन प्रमुख खंडों में विभाजित है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि यिर्मयाह की पुस्तक का अध्ययन शुरू करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक अच्छी बात सिर्फ अध्याय विभाजन और पाठ के इन तीन प्रमुख खंडों के लिए एक बुनियादी विभाजन को याद रखना है। पहला प्रमुख विभाजन अध्याय एक से 25 तक पाया जाता है। और हम उस अनुभाग को बहुत सरलता से सारांशित कर सकते हैं।

यह मुख्य रूप से यिर्मयाह की वाणी और यहूदा और यरूशलेम के लोगों के खिलाफ न्याय के संदेश हैं। वह आने वाले फैसले की घोषणा कर रहा है जो भगवान यहूदा शहर के खिलाफ लाने जा रहा है। दूसरे खंड, अध्याय 26 से 45 में विभिन्न प्रकार की सामग्री है क्योंकि अब हमारे पास मुख्य रूप से यिर्मयाह के जीवन की कहानियाँ और प्रसंग होंगे।

फिर, इसका उद्देश्य हमें यिर्मयाह के जीवन की जीवनी देना नहीं है। यह हमें उसके अनुभवों का यात्रा वृत्तांत देने के लिए नहीं है, बल्कि यह हमारे लिए इस तथ्य को प्रतिबिंबित करने के लिए है कि यहूदा ने प्रभु के वचन का पालन नहीं किया। एक आवर्ती अभिव्यक्ति जो पुस्तक के इस भाग में होगी वह यह है कि उन्होंने आज्ञा का पालन नहीं किया।

उन्होंने परमेश्वर का वचन नहीं सुना। और ऐसी विभिन्न कहानियाँ होंगी जहाँ यिर्मयाह परमेश्वर के वचन को सिखाएगा या प्रचार करेगा। वह एक संदेश की घोषणा करने जा रहा है जो भगवान ने उसे दिया है।

हम लोगों के विभिन्न समूहों की प्रतिक्रियाएँ देखने जा रहे हैं। आम तौर पर प्रतिक्रिया नकारात्मक होगी जहां वे यह नहीं सुनेंगे कि ईश्वर को भविष्यवक्ता के माध्यम से क्या कहना है। पुस्तक का अंतिम खंड, तीसरा प्रमुख खंड, अध्याय 46 से 51 में पाया जाता है।

यहाँ एक स्पष्ट परिवर्तन है. यह देखना आसान है क्योंकि यिर्मयाह अपने न्याय के संदेशों से, उन निर्णयों से जो यहूदा अनुभव करता है, उन संदेशों की ओर बढ़ता है जिन्हें यिर्मयाह ने राष्ट्रों के खिलाफ प्रचारित किया था।

अंततः, किताब में हमारे पास जो आखिरी चीज़ है, अध्याय 52, वह एक पोस्टस्क्रिप्ट है। यह एक परिशिष्ट है. यह 587-586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन की कहानी है।

और मुझे लगता है कि यह हमें यह याद दिलाने के लिए है कि यिर्मयाह के मंत्रालय के अंत में भी, जो चीज़ इज़राइल के इतिहास पर मंडरा रही है वह यरूशलेम शहर का पतन है। बदले में, लोग भूमि पर वापस आ गए होंगे, लेकिन निर्वासन, एक अर्थ में, तब तक जारी रहेगा जब तक कि भगवान उन्हें पूरी तरह से बहाल नहीं कर देते। निर्वासन, यरूशलेम का पतन प्रमुख घटना थी जिसने यिर्मयाह के मंत्रालय और एक भविष्यवक्ता के रूप में उसके संदेश को मान्य और पुष्टि की।

यह इस बात का सबूत था कि उनका संदेश वही था जो परमेश्वर लोगों से कहना चाहता था। और इसलिए यह पुस्तक में परिशिष्ट या उपसंहार के रूप में है। इसलिए, एक बार जब हम इन तीन खंडों, 1 से 25, 26 से 45, 46 से 51 को अंतिम उपसंहार के साथ समझ लेते हैं, तो मुझे लगता है, फिर से, एक व्यवस्था है जो अराजकता से उभरती है।

और भले ही यहाँ कालक्रम न हो, फिर भी हम इस पुस्तक में एक बुनियादी एकता देखना शुरू करते हैं। अब आइए पहले भाग, यिर्मयाह के न्याय के वचनों पर वापस जाएँ। इस भाग में, दो प्राथमिक बातें होंगी।

दो प्राथमिक शब्द हैं, अगर आप इन्हें याद रख सकते हैं, तो मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि इस खंड में क्या है। एक आरोप लगाया जाएगा, और एक अभियोग लगाया जाएगा। आरोप इस तथ्य से संबंधित है कि यिर्मयाह, जब वह न्याय के इस संदेश का प्रचार कर रहा है, तो वह लोगों को केवल यह नहीं बता रहा है कि परमेश्वर उनका न्याय करने जा रहा है।

वह उन कारणों की व्याख्या कर रहा है कि वह न्याय क्यों हो रहा है। उन्होंने क्या किया है? उन्होंने वाचा का उल्लंघन कैसे किया है? यही आरोप है। अभियोग उस विशिष्ट न्याय से संबंधित है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध लाने जा रहा है।

परमेश्वर किस तरह से उनका न्याय करेगा? परमेश्वर के न्याय के कारण उनके साथ क्या-क्या होने वाला है? तो, आइए कुछ मुख्य अंशों का सारांश दें जो परमेश्वर द्वारा इस्राएल पर लगाए गए अभियोग के बारे में बात करते हैं। पुस्तक के आरंभिक भाग, अध्याय दो में वापस जाएँ, जो मुझे लगता है कि पूरी पुस्तक के लिए एक प्रारंभिक संदेश है, लोगों की मूर्तिपूजा के बारे में एक आरोप है और यह तथ्य कि लोगों ने दो बुराइयाँ की हैं। उन्होंने मुझे, जीवन जल के सोते को त्याग दिया है।

उन्होंने अपने लिये टूटे-फूटे हौद बनवाये हैं जिनमें पानी नहीं रह सकता। सबसे घृणित, हताश करने वाला कार्य जो इस्राएल और यहूदा ने किया है वह यह है कि उन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया है और वे अन्य मूर्तियों की पूजा करने लगे हैं। एक अर्थ में, मूर्तिपूजा परम पाप है क्योंकि यह विश्वासघात का पाप है।

यह टूटे हुए रिश्ते का पाप है। यह एक पाप है जहाँ वे व्यक्तिगत रूप से ईश्वर के प्रति विश्वासघाती रहे हैं, लेकिन यह उनके अन्य सभी पापों की जड़ और आधार भी बन जाता है। अध्याय दो, श्लोक 20, एक ऐसी छवि है जो पूरी किताब में अपना काम करेगी।

बहुत समय पहले मैं ने तेरा जूआ तोड़ डाला, मैं ने तेरे बन्धन तोड़ दिए, परन्तु तू ने कहा, कि मैं सेवा न करूँगा। हाँ, हर ऊँची पहाड़ी पर और हर हरे पेड़ के नीचे तू वेश्या की तरह झुकती थी। और इसलिए यिर्मयाह लोगों को परमेश्वर की बेवफा पत्नी के रूप में चित्रित करने जा रहा है।

वे एक वेश्या हैं जो प्रभु के प्रति विश्वासघाती रही हैं। कल्पना कीजिए कि यदि हमारा पादरी रविवार की सुबह इस तरह से खड़ा होकर हमसे भिड़ जाए। हमारी क्या प्रतिक्रिया होगी? लेकिन

यह एक ऐसी छवि है जो यिर्मयाह की पूरी पुस्तक में अपने आप काम करने वाली है। अभियोग अध्याय सात में जारी है।

मुझे लगता है कि यिर्मयाह के मंत्रालय के सबसे प्रसिद्ध भागों और घटकों में से एक वह दिन था जब उसने खड़े होकर अपने प्रसिद्ध मंदिर उपदेश का प्रचार किया था। और फिर, यिर्मयाह को खड़े होकर लोगों से कहने के लिए जो साहस चाहिए था, तुमने पाप किया है। तुमने वाचा को तोड़ा है। और इसके परिणामस्वरूप, यह मंदिर जिसके बारे में तुम सोचते हो कि यह तुम्हारी सुरक्षा की गारंटी देता है, जिसके बारे में तुम सोचते हो कि यह गारंटी देता है कि परमेश्वर हमेशा तुम्हें आशीर्वाद देगा, तुमने इस मंदिर को चोरों का अड्डा बना दिया है।

एक तरह से, आपकी वाचा की बेवफाई के कारण, मंदिर बोनी और क्लाइड के लिए छिपने का स्थान बन गया है। और इस वजह से, भगवान मंदिर को नष्ट करने जा रहे हैं। भगवान इसे गिराने जा रहे हैं।

अध्याय 10, एक और अभियोग, एक और उपदेश जो यिर्मयाह देता है। उन्होंने मूर्तियों की पूजा की है, और ये मूर्तियाँ उतनी ही बेकार और बेजान हैं जितनी कि तरबूज के खेत में बिजूका। यिर्मयाह अध्याय 10, श्लोक पाँच।

अध्याय 11, यिर्मयाह द्वारा दिया गया उपदेश। लोगों ने वाचा को तोड़ दिया है। उन्होंने वाचा की शर्तों का पालन नहीं किया है।

वाचा सिर्फ परमेश्वर के आशीर्वाद के बारे में नहीं है। यह उन ज़िम्मेदारियों के बारे में भी है जो परमेश्वर ने अपने वाचा के लोगों के रूप में उन पर डाली हैं। और इसलिए इस उपदेश के अंत में, इसके अंत के करीब, अध्याय 11, श्लोक 10 और 11 में, वे अपने पूर्वजों के अधर्म की ओर लौट आए हैं।

उन्होंने मेरे वचनों को सुनने से इनकार कर दिया है। वे दूसरे देवताओं की सेवा करने के लिए उनके पीछे चले गए हैं। इस्राएल और यहूदा के घराने ने मेरी उस वाचा को तोड़ दिया है जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ बाँधी थी।

इसलिए, यहोवा यों कहता है, देखो, मैं उन पर ऐसी विपत्ति लाने जा रहा हूँ जिससे वे बच नहीं सकते। पुस्तक के पहले भाग में अभियोग के विचार को देखते हुए, हम अध्याय 22 और अध्याय 23 पर जा सकते हैं। जब हम यिर्मयाह के इतिहास और पृष्ठभूमि को देख रहे थे, तो हमने अध्याय 22, यहूदा के अंतिम राजाओं की असफलताओं को देखा।

और याद रखें, यिर्मयाह की शुरुआत योशियाह के ईश्वरीय शासन से होती है, लेकिन बहुत जल्दी ही यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन और सिदकिय्याह का अधर्मी शासन शुरू हो जाता है। उनमें से हर एक ने वही किया जो प्रभु की नज़र में बुरा था। प्रभु उनके नेतृत्व को दोषी ठहराते हैं।

यहूदा की जो समस्याएँ थीं और एक राष्ट्र के रूप में यहूदा के जीवन में जो पाप आया था, वह बुरे नेतृत्व के कारण हुआ था जो परमेश्वर से दूर हो गया था। तो, अध्याय 22 उनके राजाओं और

उनके नेताओं को दोषी ठहराता है। अध्याय 23 में, हमारे पास उनके भविष्यवक्ताओं का अभियोग है, और इज़राइल में आध्यात्मिक नेता भी उतने ही समस्याग्रस्त थे जितने कि नागरिक नेता।

भविष्यवक्ताओं और पुजारियों दोनों ने परमेश्वर का वचन सिखाने की अपनी ज़िम्मेदारी छोड़ दी थी। भविष्यवक्ताओं के साथ समस्या, विशेष रूप से अध्याय 23 में, यह है कि वे एक संदेश का प्रचार कर रहे हैं जो उनके अपने सपनों, उनके अपने विचारों और इज़राइल के इतिहास में क्या चल रहा है, इस पर उनके अपने दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है। वे प्रभु के शब्द नहीं हैं।

और प्रभु कहते हैं कि मैं इन भविष्यवक्ताओं पर न्याय करने जा रहा हूँ क्योंकि, सबसे पहले, मैंने उन्हें पाप नहीं किया। और वे यहोवा की सम्मति पर स्थिर नहीं रहे। उन्हें मेरी ओर से कोई सन्देश नहीं मिला है, फिर भी वे इस सन्देश का प्रचार कर रहे हैं।

और फिर अंततः अध्याय 25 में, यह खंड परमेश्वर द्वारा यह कहकर समाप्त होता है कि वह यहूदा के लोगों को अपने न्याय की मदिरा पिलाने जा रहा है। और वह न्याय बेबीलोनियों के हाथों आने वाला है। इसलिए, इस पूरे खंड में, अध्याय 1 से 25 तक, अभियोग पर जोर दिया गया है।

लेकिन एक बार जब अभियोग लगाया जाता है और एक बार यिर्मयाह के मंत्रालय में यह स्पष्ट और स्पष्ट हो जाता है कि पश्चाताप नहीं होने वाला है, तो यह भी विचार है कि अब यहां विशिष्ट तरीका है, यह घोषणा है कि भगवान उस फैसले को कैसे लाने जा रहे हैं। और हमारे पास अध्याय 1 से 25 में, फिर से, अक्सर बहुत ज्वलंत और शक्तिशाली कविता और कल्पना का उपयोग करते हुए, यह है कि इसमें उस विशिष्ट प्रकार के फैसले का वर्णन होगा जो भगवान लोगों के खिलाफ लाने जा रहा है। और इस आने वाले न्याय की घोषणा, यह शक्तिशाली सेना इस्राएल की भूमि और यहूदा की भूमि को पार करने जा रही है, और वे दक्षिणी राज्य पर हमला करने जा रहे हैं और उन्हें निर्वासन में भेज देंगे।

मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि यिर्मयाह की पुस्तक में, जैसे ही यह आरोप लागू होना शुरू होता है, सबसे पहले, यिर्मयाह उस विशिष्ट राष्ट्र की पहचान नहीं करता है जिसे भगवान उनके खिलाफ लाने जा रहे हैं। एक तरह से यह रहस्य को और बढ़ाता है। एक ऐसी सेना है जिसे आप राजनीतिक रूप से मानचित्र पर नहीं ढूंढ सकते, न ही उससे बात कर सकते हैं और न ही पहचान सकते हैं, लेकिन एक ऐसी सेना है जो आप पर हमला करने आ रही है।

भविष्यवक्ता ने इस सेना का सबसे स्पष्ट, शक्तिशाली तरीके से वर्णन किया है क्योंकि अगर लोग किसी तरह समझ सकते हैं कि यह निर्णय कितना भयानक और भयानक होने वाला है, तो शायद वे जवाब देंगे, पश्चाताप करेंगे, और अपने पापी तरीकों से बदल जाएंगे। और इसलिए, आरोप और अभियोग के बाद, फैसले और आने वाली सेना का वर्णन है, विशेष रूप से यिर्मयाह अध्याय चार और पांच में। और यहाँ हमले का विवरण है।

यहाँ वह विशिष्ट तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर यहूदा के लोगों का न्याय करेगा। और यह कहता है, "... यहूदा में प्रचार करो और यरूशलेम में प्रचार करो और यह कहो, देश भर में तुरही फूँको,

ऊंचे स्वर से चिल्लाओ और कहो, इकट्ठे हो जाओ और गढ़वाले नगरों में चलो, सिय्योन की ओर झण्डा खड़ा करो, और भाग जाओ सुरक्षित रहो, मत रहो, क्योंकि मैं यहोवा उत्तर दिशा से विपत्ति लाने पर हूँ, एक सिंह अपनी झाड़ियों से निकल कर, जाति जाति का नाश करनेवाला निकला है।

वह तुम्हारी भूमि को उजाड़ने के लिये अपने स्थान से निकला है। तुम्हारे नगर निवासियों के बिना खंडहर हो जाएंगे। इस कारण टाट ओढ़ लो, विलाप करो, और विलाप करो, क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ कोप हम पर से शान्त नहीं हुआ है।" आप राष्ट्रीय विपत्ति के दृश्य की कल्पना कर सकते हैं।

लोग गढ़वाले नगरों में इकट्ठे हो रहे हैं क्योंकि कोई शत्रु उन पर आक्रमण करने आ रहा है। और यह शत्रु सिंह के समान है। और फिर, यह कोई ऐसी चीज़ या व्यक्ति नहीं है जिसे यहूदा पहचान सके।

यह रहस्यमयी सेना ही है जो उनके खिलाफ आ रही है। अध्याय चार, श्लोक 13 में एक और वर्णन है, "...देखो, वह बादलों की तरह ऊपर आ रहा है। उसके रथ बवंडर की तरह हैं।

उसके घोड़े उकाबों से भी तेज़ हैं। हम पर हाय, क्योंकि हम बर्बाद हो गए हैं।" और अगर आप किसी तरह खुद को यरूशलेम शहर में रख सकते हैं, तो कल्पना करें कि उस समय दुश्मन के हमले के तहत कैसा होगा। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यिर्मयाह लोगों को किस बारे में चेतावनी दे रहा है।

अध्याय पाँच, श्लोक 15 और 17 में प्रभु कहते हैं, "...देखो, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से एक राष्ट्र ला रहा हूँ।" यह एक स्थायी राष्ट्र है। यह एक प्राचीन राष्ट्र है।

यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी भाषा तुम नहीं जानते, न ही तुम समझ सकते हो कि वे क्या कहते हैं। उनका तरकश एक खुली कब्र की तरह है। वे सभी शक्तिशाली योद्धा हैं।

वे तुम्हारी फसल और तुम्हारा भोजन खा जाएंगे। वे तुम्हारे बेटे-बेटियों को खा जाएंगे। वे तुम्हारे भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को खा जाएंगे।

वे तुम्हारी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को, और तुम्हारे गढ़वाले नगरों को, जिन पर तुम भरोसा करते हो, खा जाएंगे। वे तुम्हें तलवार से मार गिराएंगे।" तो फिर, यह ऐसा है, वाह, यह एक भयानक, भयंकर न्याय होने जा रहा है। हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता है।

हमें अपने तरीके बदलने की ज़रूरत है। लेकिन आश्चर्यजनक बात यह है कि न्याय कैसा होगा, इसका क्या रूप होगा, यहाँ जो विशिष्ट घोषणा होने वाली है, इन सब चित्रणों के बावजूद, लोग प्रतिक्रिया नहीं देते और इसका पश्चाताप नहीं करते। अंत में, अध्याय 20 में, बेबीलोन को उस विशिष्ट राष्ट्र के रूप में पहचाना जाता है जिसे परमेश्वर यहूदा के लोगों के विरुद्ध लाएगा।

अध्याय 25, फिर से, इस खंड का समापन सारांश है। यह पुस्तक का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसे एक ऐसे कांटे के रूप में कल्पना करें जो हमें खंड एक से खंड दो में ले जाता है। 25:11 में बेबीलोन के बारे में यह संदेश है।

यह पूरा देश उजाड़ और बंजर हो जाएगा। और ये राष्ट्र 70 साल तक बाबुल के राजा की सेवा करेंगे। फिर, 70 साल पूरे होने के बाद, मैं उस राष्ट्र में बाबुल के राजा को दण्ड दूँगा।

यहोवा की यह वाणी है कि कसदियों का देश उनके अधर्म के कारण सदा के लिए उजाड़ हो गया है। मैं इस देश पर वे सभी वचन लागू करूँगा जो मैंने इसके विरुद्ध कहे हैं, अर्थात् इस पुस्तक में लिखी हुई सभी बातें, जो यिर्मयाह ने सभी राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणी की हैं। तो, यह यिर्मयाह का संदेश है।

मुझे लगता है कि एक संकलन, जेरेमियाज़ ग्रेटेस्ट हिट्स, हमारे लिए उन सभी चेतावनियों का वर्णन करता है जो जेरेमिया ईसा पूर्व 626 से लेकर उस समय तक लोगों को देते रहे हैं जब तक कि यरूशलेम शहर का पतन नहीं होने वाला है। ये उस प्रकार के संदेश हैं जिनका प्रचार यिर्मयाह करता रहा है। जब प्रभु ने यिर्मयाह को 605 ईसा पूर्व में एक पुस्तक पर लिखने के लिए कहा, तो वह सभी शब्द जो वह यहूदा के लोगों के खिलाफ प्रचार कर रहा था, यिर्मयाह 1 से 25, हमारे लिए एक प्रतिनिधि उदाहरण है कि यह संदेश कैसा था।

जरूरी नहीं कि ये सटीक शब्द हों। जरूरी नहीं कि यह हर उपदेश हो जो यिर्मयाह ने प्रचार किया हो, लेकिन यह यहूदा और यरूशलेम के खिलाफ फैसले का यिर्मयाह का संदेश है। आरोप, अभियोग, यही आपने किया है।

और फिर घोषणा: भगवान आपके साथ यही करने जा रहा है। यही फैसला आने वाला है। फिर, अध्याय 26 से 45 में, हम सामग्री के एक नए सेट में परिवर्तन करते हैं।

मुख्य रूप से भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्ता के जीवन से संबंधित आख्यान। अध्याय 37 से 44 में, पुस्तक में कालक्रम के सबसे करीब जो चीज़ है, वह यरूशलेम के पतन से ठीक पहले के दिनों में क्या हुआ, इसकी कहानी है। और फिर उसके तुरंत बाद यहूदा में क्या हुआ?

यिर्मयाह के जीवन में क्या हुआ, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यहूदा राष्ट्र के जीवन में उसके अंतिम दिनों में क्या हुआ? इस अंतिम भाग में हमें अध्याय 1 से 25 में आने वाले न्याय की चेतावनियाँ मिलती हैं। उस न्याय की पूर्ति वास्तव में अध्याय 37 से 44 की कहानी में आती है।

लेकिन इसके साथ ही, भविष्यद्वक्ता के जीवन से ये कहानियाँ फिर से एक मुख्य विचार पर जोर देती हैं। लोगों ने प्रभु के वचन को नहीं सुना। उन्होंने यिर्मयाह द्वारा प्रचार किए जा रहे न्याय के संदेशों पर ध्यान नहीं दिया।

और यिर्मयाह की पुस्तक में निर्वासन क्यों हुआ, इसका स्पष्टीकरण यह है कि लोगों ने परमेश्वर के वचन को नहीं सुना। निर्वासन इसलिए नहीं हुआ क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया

था। निर्वासन इसलिए नहीं हुआ क्योंकि प्रभु, किसी तरह से, अपनी वाचा के वादों के प्रति विश्वासघाती रहे थे।

निर्वासन इसलिए नहीं हुआ क्योंकि बेबीलोन की सेनाएँ यहोवा से बड़ी थीं, जो इस्राएल का परमेश्वर था। निर्वासन विशेष रूप से इसलिए हुआ क्योंकि लोगों ने परमेश्वर के वचन को नहीं सुना। पुस्तक के इस भाग में यिर्मयाह ने विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न और विरोध का अनुभव किया है, जैसे कि उसे जेल में डाला जाना, मौत की धमकी देना, कुएँ में फेंकना, ले जाना, अपहरण करना और शरणार्थी के रूप में मिस्र भेज दिया जाना।

ये सभी बातें इस बात का प्रतिबिंब हैं कि लोगों ने परमेश्वर के वचन को कैसे नहीं सुना। यिर्मयाह के साथ किया गया व्यवहार यिर्मयाह परमेश्वर के वचन का प्रतिनिधित्व करता है। एक अर्थ में, वह परमेश्वर के वचन की जीवित अभिव्यक्ति है।

और यिर्मयाह द्वारा अनुभव किया गया हर प्रकार का दुर्व्यवहार इस बात का प्रतिबिंब है कि कैसे उसके संदेश और परमेश्वर के वचन को अस्वीकार किया गया। हमें अध्याय 37, पद 1 और 2 में यह टिप्पणी मिलती है। कई मायनों में, यह उन सभी बातों का सारांश है जो हम इन विशेष कहानियों में 26 से 45 में देखते हैं। अध्याय 37, पद 1 कहता है, योशियाह का पुत्र सिदकिय्याह, याद रखें कि वह यहूदा का अंतिम राजा है, जिसे यहूदा के राजा नबूकदनेस्सर ने कोन्याह या यहोयाकीन के स्थान पर शासन किया था।

परन्तु न तो उस ने, न उसके सेवकों ने, न उस देश के लोगों ने यहोवा की वे बातें सुनीं जो उस ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहीं। मुद्दे का एक हिस्सा यह है कि इस्राएल के राजाओं या यहूदा के राजाओं ने नहीं सुनी। यहोयाकीम और सिदकिय्याह ने, मुख्य रूप से इस खंड में, परमेश्वर के वचन को नहीं सुना।

परन्तु उसके अधिकारियों, विशेषकर सैन्य अधिकारियों ने, परमेश्वर का वचन नहीं सुना। वे यिर्मयाह से नफरत करते थे। वे उसे देशद्रोही के रूप में देखते थे।

उन्होंने कहा कि हमें उसे लोगों की नज़रों से दूर करना होगा क्योंकि हम नहीं चाहते कि लोग उसका संदेश सुनें कि हमारा प्रतिरोध व्यर्थ है। परन्तु लोगों ने स्वयं परमेश्वर की बात भी न मानी। और इसलिए, इसके परिणामस्वरूप, यहूदा परमेश्वर के सामने दोषी है।

उन्होंने सैकड़ों वर्षों से वाचा का उल्लंघन किया है। उन्होंने मूर्तियों की पूजा की है, लेकिन उस अपराधबोध में यह भी शामिल है कि जब परमेश्वर ने उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए एक भविष्यद्वक्ता भेजा, तो उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी। अब, मुझे लगता है कि लोगों द्वारा परमेश्वर के वचन को न सुनने के दो सबसे उल्लेखनीय उदाहरण अध्याय 26 और अध्याय 36 में पाए जाते हैं।

मुझे लगता है कि अध्याय 26 यिर्मयाह के मंदिर उपदेश का दूसरा रूप है जो अध्याय सात में प्रचारित किया गया है। यदि यह वही उपदेश नहीं है, तो यह बहुत करीब है। और हमारे पास लोगों के विभिन्न समूहों की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया है।

जैसे ही यिर्मयाह ने यह संदेश दिया, उससे हमें पता चला कि आध्यात्मिक नेताओं और लोगों ने कहा, तुम्हें मृत्युदंड दिया जाना चाहिए क्योंकि तुमने भविष्यवाणी की है कि परमेश्वर अपने ही घर को नष्ट करने जा रहा है। उन्होंने उसे एक झूठा भविष्यवक्ता माना। अब, लोग अंततः स्वीकार करते हैं कि यिर्मयाह एक सच्चा भविष्यवक्ता है, लेकिन किसी भी तरह की विशिष्ट कार्रवाई का कोई संकेत नहीं है जो यह बताता है कि उन्होंने परमेश्वर के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया दी है।

अध्याय 26 में मंदिर के उपदेश के तुरंत बाद, हम देखते हैं कि राजा यहोयाकीम ने भविष्यवक्ता उरीयाह को मौत के घाट उतार दिया। तो, यह इस खंड की बिलकुल शुरुआत में ही एक कहानी है कि कैसे लोगों ने परमेश्वर के वचन की अनदेखी की। और फिर मुझे लगता है कि परमेश्वर के वचन को न सुनने का दूसरा सबसे बढ़िया उदाहरण यह है कि अध्याय 36 में यहोयाकीम ने यिर्मयाह की भविष्यवाणियों की पुस्तक को काट दिया, जला दिया और नष्ट कर दिया।

यिर्मयाह ने बारूक को आदेश दिया, इन शब्दों को लिखो, मंदिर जाओ, संदेश का प्रचार करो। ऐसे कई अधिकारी हैं जो यह महसूस करते हैं कि यह महत्वपूर्ण है। वे इसे राजा के पास ले जाते हैं, वह इसे काट देता है, वह इसे आग में जला देता है।

एक अर्थ में जो परमेश्वर के वचन के प्रति यहूदा की प्रतिक्रिया को संपुटित करता है। हम इसे सुनना नहीं चाहते। और उसी के परिणाम स्वरूप विनाश का कारण बनता है।

और यही उन घटनाओं का कारण है जो अध्याय 37 से 44 में घटित होती हैं। अब, यदि आप यिर्मयाह की पुस्तक से परिचित हैं, तो आप जानते हैं कि अध्याय 26 से 45 में, एक और महत्वपूर्ण संदेश है। और एक विशिष्ट खंड है जिसे हमें अध्याय 26 से 44 या 45 में अलग करने की आवश्यकता है।

और वह अध्याय 30 से 33 में सांत्वना की पुस्तक है। और यही संदेश वास्तव में, एक अर्थ में, पुस्तक के केंद्र में है। और हम कल्पना करते हैं कि जब यिर्मयाह और बारूक इस पुस्तक को एक साथ रख रहे हैं, तो वे इस तथ्य को उजागर करना चाहते हैं कि निर्णय ईश्वर का अंतिम शब्द नहीं है।

तो, परमेश्वर के वचन की अस्वीकृति के बारे में इन सभी कहानियों के बीच में, इन सभी कहानियों के बीच में कि कैसे यिर्मयाह को सताया गया और उसका विरोध किया गया, केंद्र में एक बयान है कि भगवान ने अपने लोगों के साथ समाप्त नहीं किया है। ईश्वर उन्हें त्यागने वाला नहीं है। भगवान अंततः उन्हें पुनर्स्थापित करने जा रहे हैं।

परमेश्वर इस्राएल के साथ एक नई वाचा बाँधने जा रहा है। परमेश्वर अपना नियम हृदयों पर लिखने जा रहा है। और इसलिए अवज्ञा का यह निरंतर इतिहास बने रहने के बजाय, जब भगवान भविष्य में अपने लोगों को बहाल करेंगे, तो वे आज्ञा मानने में सक्षम होंगे।

वे परमेश्वर के वचन को सुनेंगे, और उसका अनुसरण करेंगे। और आशा का यह संदेश, मुझे लगता है, और भी अधिक आश्चर्यजनक है। यह और भी अधिक अविश्वसनीय है।

यह सब इस तथ्य के प्रकाश में उज्ज्वल और आशाजनक है कि यह अवज्ञा और न्याय से घिरा हुआ है। इसलिए, जब आप यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ रहे हैं, तो इस तथ्य पर अपना ध्यान केंद्रित रखें कि पुस्तक के केंद्र में, आशा का संदेश है। और फिर अंत में अध्याय 46 से 51 में, और हम इस खंड का सारांश देंगे, हमारे पास राष्ट्रों का न्याय है।

जब मैं इस भाग को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह भाग दो महाशक्तियों के न्याय के इर्द-गिर्द बना है। इस भाग की शुरुआत में मिस्र का न्याय है। और फिर अध्याय 50 और 51 में बेबीलोन का न्याय है।

इसके बीच, हमारे पास यहूदा के लोगों को घेरने वाले सभी छोटे राष्ट्रों और राष्ट्र-राज्यों का निर्णय है। वे सभी परमेश्वर को उत्तर देते हैं। वे सभी अंततः ईश्वर के प्रति जवाबदेह हैं।

जैसा कि हम खंड के अंतिम भागों में महाशक्तियों, मिस्र और बेबीलोन के फैसले को देखते हैं, हमें याद दिलाया जाता है कि कोई भी राष्ट्र इतना महान नहीं है कि वह ईश्वर को जवाब देने से बच सके। और यदि उस समय के राष्ट्र और राज्य और शक्तियाँ और साम्राज्य ईश्वर को उत्तर देंगे, तो आज के साम्राज्य और महान राष्ट्र भी ऐसा ही करेंगे। लेकिन इसके बीच, छोटे शहर राज्य हमें याद दिलाते हैं कि कोई भी राष्ट्र इतना छोटा नहीं है कि भगवान उनकी उपेक्षा करें।

और कोई भी राष्ट्र इतना छोटा नहीं है कि वे परमेश्वर के न्याय से बच सकें क्योंकि वह उन्हें नज़रअंदाज कर देगा। और इसलिए, भगवान का न्याय होने वाला है। परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करने जा रहा है।

यिर्मयाह की पुस्तक में एक योजना बताई गई है, जहाँ परमेश्वर पहले इस्राएल का न्याय करता है, और फिर वह बाबुल का न्याय करता है। परमेश्वर बाबुल को अपने न्याय के साधन के रूप में उपयोग करता है। नबूकदनेस्सर उसका सेवक है।

लेकिन अंतिम बात यह है कि परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देता है। और यहूदा ने बेबीलोन के हाथों जो कुछ झेला, उसका बदला अंततः बेबीलोनियों को ही भुगतना पड़ेगा। परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा।

अंत में, इस खंड में मैं जिस अंतिम बात पर ध्यान देना चाहूँगा, वह यह है कि परमेश्वर का राष्ट्रों के लिए संदेश केवल न्याय का संदेश नहीं है। वास्तव में इनमें से तीन राष्ट्रों को यह वादा किया गया है कि परमेश्वर उनके भाग्य को बहाल करने जा रहा है। यह वही अभिव्यक्ति है जिसका उपयोग अध्याय 30 से 33 में यह समझाने के लिए किया गया है कि परमेश्वर इस्राएल के लिए क्या करने जा रहा है।

अध्याय 30 की शुरुआत में, मैं इस्राएल का न्याय करने के बाद उनके भाग्य को बहाल करने जा रहा हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं उन्हें कैद से वापस लाने जा रहा हूँ। सात्वना की पुस्तक के अंत में, अध्याय 33 में, फिर से, यह वादा, मैं इस्राएल के भाग्य को बहाल करने जा रहा हूँ।

खैर, जब हम राष्ट्रों के न्याय को देखते हैं, तो आश्चर्यजनक बात यह है कि परमेश्वर की योजना केवल राष्ट्रों को नष्ट करने की नहीं है। इनमें से कुछ राष्ट्रों को यह आशा भी दी गई है कि प्रभु उन्हें भी बहाल करने जा रहे हैं। और इसलिए, अध्याय 48, श्लोक 47 में, प्रभु मोआब से कहते हैं, तुम्हारा न्याय करने के बाद, मैं तुम्हारा भाग्य बहाल करूँगा।

अध्याय 49, श्लोक छह में अम्मोन के लोगों से कहा गया है कि, मैं तुम्हारा न्याय करने के बाद, तुम्हारा भाग्य फिर से स्थापित करूँगा। और इसलिए, यह संभावना है कि परमेश्वर के राज्य के समय में, और जब परमेश्वर इस्राएल के लोगों को पुनर्स्थापित करेगा, तो ये राष्ट्र भी इसमें शामिल होंगे। लेकिन जब हम बेबीलोन को दी गई चेतावनियों को देखते हैं, तो कोई उम्मीद नहीं दिखती।

उनसे कोई वादा नहीं किया गया है। यह तो पूर्ण विनाश का संदेश मात्र है। और इसका उद्देश्य अंततः यह था कि भगवान अपने लोगों की बहाली का वादा कर रहे थे।

और मैं अध्याय 50, छंद चार और पांच को पढ़कर उस आशा को समाप्त करना चाहता हूँ जो इसराइल को यह एहसास दिलाती है कि ईश्वर एक दिन अंततः उनके राष्ट्रों का न्याय करेगा। यहोवा यह कहता है, उन दिनों में, और यहोवा की यह भी वाणी है, कि उस समय इस्राएल और यहूदा के लोग इकट्ठे होकर रोते हुए आएं, और अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढ़ेंगे। वे सिंथोन की ओर मुंह करके उसका मार्ग पूछेंगे, और कहेंगे, आओ, हम यहोवा के साथ ऐसी सदा की वाचा बान्धें, जो कभी न भूली जाएगी।

राष्ट्रों का न्याय करने में परमेश्वर का उद्देश्य केवल अपना क्रोध प्रकट करना नहीं था, बल्कि अंततः अपने लोगों की पुनर्स्थापना करना और भविष्य के राज्य को क्रियान्वित करना था जब सभी राष्ट्रों को परमेश्वर ने इस्राएल के लिए जो योजना बनाई थी उसमें शामिल किया जाएगा। मुझे लगता है कि हम यिर्मयाह की पुस्तक को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं जब हम इसके क्रम को समझते हैं। यिर्मयाह न्याय और उद्धार का भविष्यवक्ता है।

मैं अक्सर अपने विद्यार्थियों से कहता हूँ, अगर कभी कोई आपसे दीक्षा परीक्षा में पुराने नियम के किसी भविष्यवक्ता का संदेश पूछे, तो आप शायद बस इतना कहकर काम चला लेंगे कि वे न्याय और उद्धार का उपदेश देते हैं। यिर्मयाह के बारे में यह बात बिलकुल सच है। वह तोड़ता है, नष्ट करता है, उखाड़ता है, लेकिन वह रोपता है और फिर से बनाता है।

यिर्मयाह की पुस्तक भी तीन भागों में विभाजित है। पहले अध्याय 1 से 25 में यहूदा और यरूशलेम के विरुद्ध न्याय के संदेश हैं। अध्याय 26 से 45 में यहूदा ने प्रभु के वचन का पालन न करने की कहानी है।

फिर, अध्याय 46 से 51 में, हमारे पास राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ हैं कि कैसे परमेश्वर इस्राएल का न्याय करेगा, लेकिन फिर वह उनके शत्रुओं का न्याय करेगा। यिर्मयाह की पुस्तक न्याय और उद्धार के विचार के इर्द-गिर्द बनी है।

यह डॉ. गैरी येट्स की यिर्मयाह की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र छह है, यिर्मयाह की

पुस्तक का अवलोकन।